माई की कहानी

माइकल, हिंदी: विदूषक

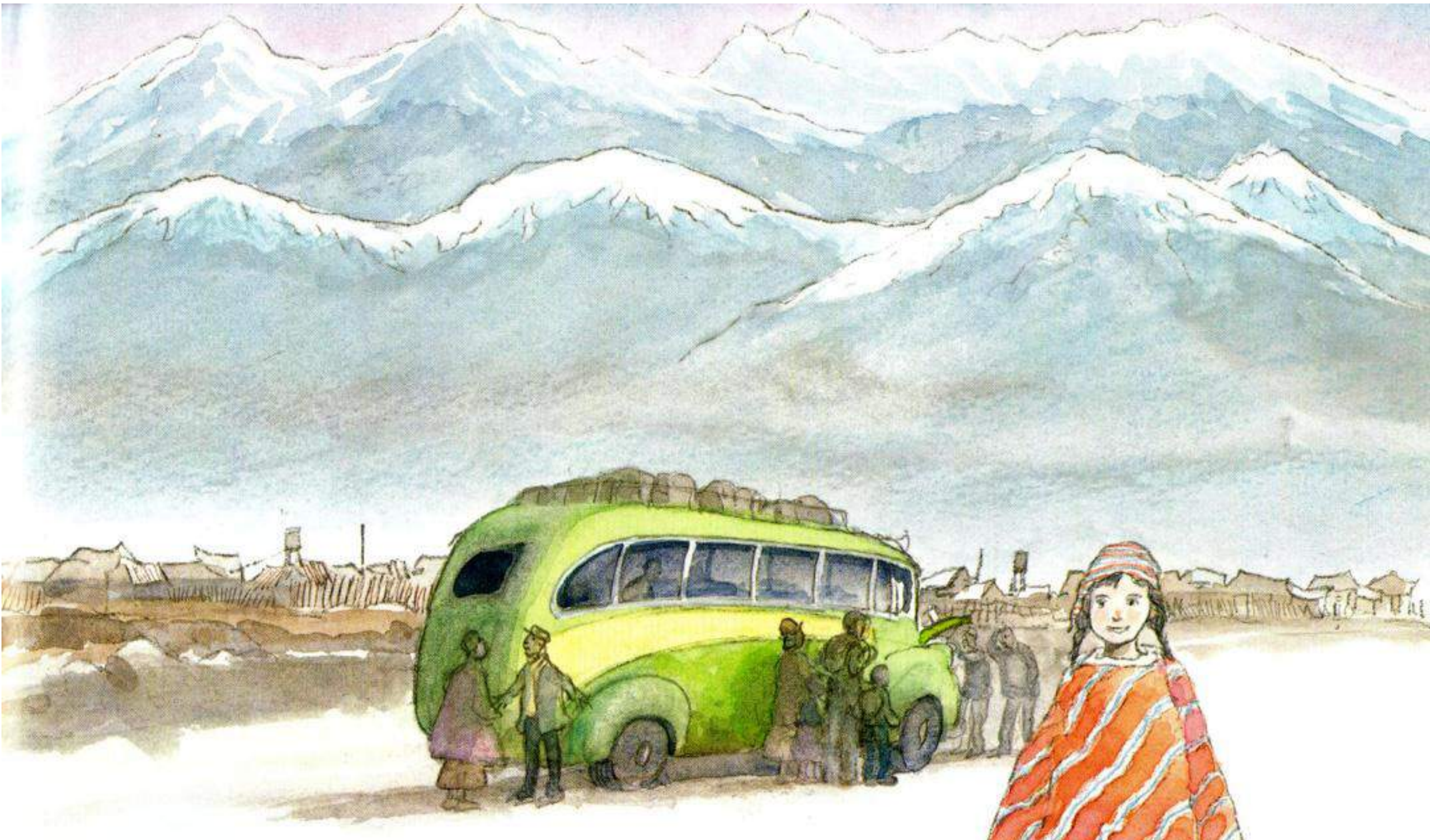

जिस दिन मैं माई से पहली बार मिला वो दिन मैं कभी नहीं भूलूंगा. मैं जिस बस में यात्रा कर रहा था वो ख़राब हो गई थी. उसी वजह से मैं माई के गाँव में पहुंचा. हम दोनों में तुरंत दोस्ती हो गई. यहाँ मैं तुम्हें माई की कहानी सुनाऊँगा. लो सुनो.

माई के गाँव का नाम है - कमपमेंतो सन-फ्रांसिस्को और वो स्नो से ढंकी पहाड़ी और एक बड़े शहर के बीच बसा है. वो कोई खास जगह नहीं है. पर माई के लिए वो उसका घर है.

माई के गाँव में कोई सुन्दर बगीचा या पेड़ नहीं है.
वहां कोई पक्की सड़क भी नहीं है, सिर्फ एक कच्ची पगडंडी है.

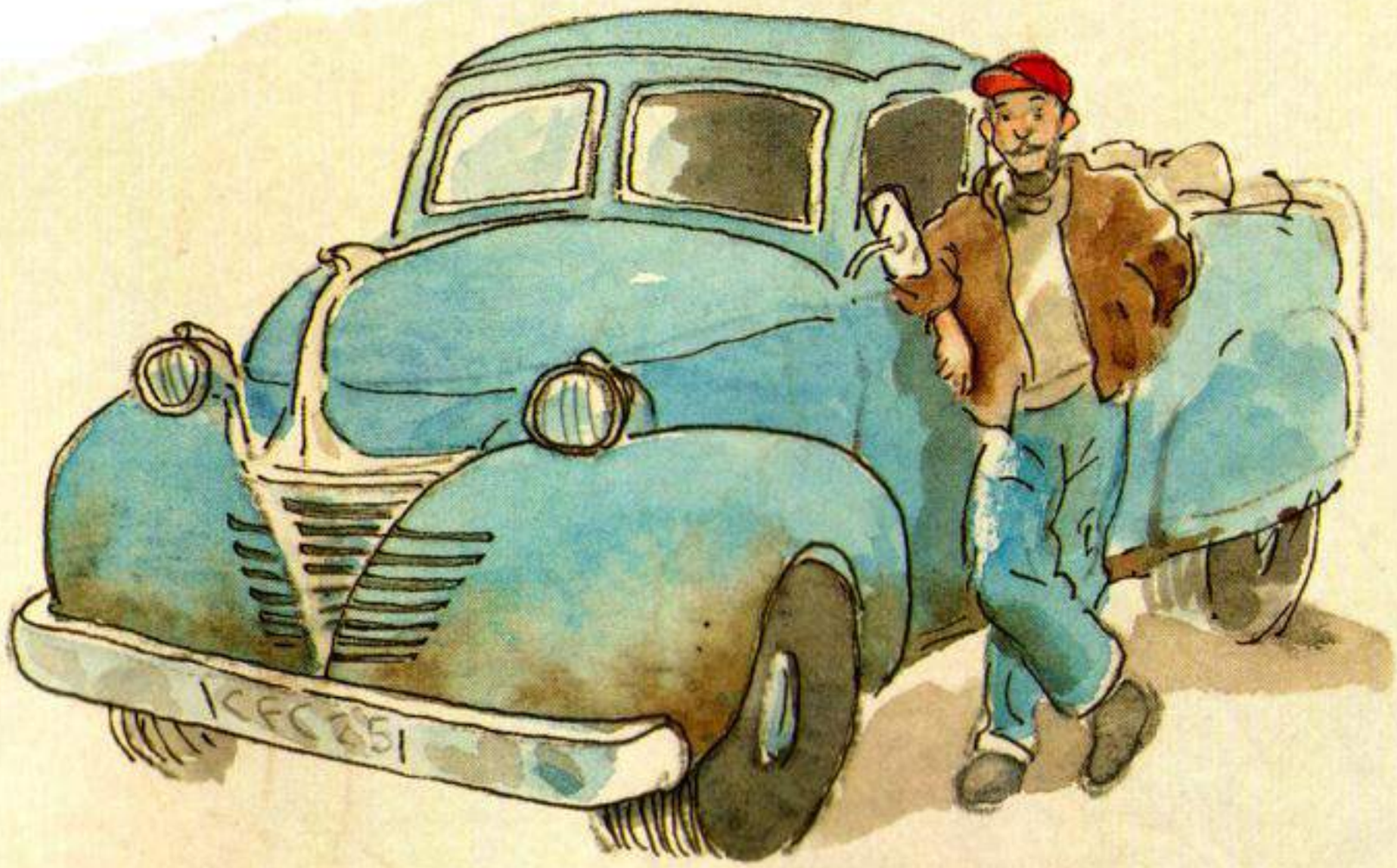

यह माई के पापा हैं
अपने ट्रक के साथ.

वो रोज़ कबाड़ बेंचने
के लिए शहर जाते हैं.

अब जहाँ शहर है वहां कभी खेत होते थे. पर धीरे-धीरे शहर बड़ा हुआ और बहुत फैला. अब माई का परिवार शहर के फेंके हुए कचरे पर ही जिंदा है.

यह माई का घर है.

माई की माँ

उनका घर, फेंकी हुई लकड़ी की क्रेटों, पुराने बैनर और अन्य फेंकी हुई चीज़ों से बना है.

माई का स्कूल

फुटबाल का खेल बच्चों को सबसे पसंद है.

यह वो भट्टी है जहाँ गांववाले
अपनी ब्रेड (रोटी) सेंकते हैं.

कचरे के ढेर में मिली चीज़ों की मरम्मत
बच्चे बड़ी कुशलता से करते हैं.

माई के पापा जब घर वापिस आते हैं तो कभी तो उनकी जेब में पैसे होते हैं. पर अक्सर उनकी जेब खाली ही होती है और वो उदास होते हैं.

हर शाम माई, अपने पापा से मिलने के लिए दौड़कर जाती है.

माई के पिता का सपना है – एक दिन ईंट का पक्का मकान बनाने का.

पतझड़ के शुरू में एक दिन जब माई के पापा घर आए तो उनके चेहरे पर एक अजीब सी मुस्कान थी. उन्होंने अपनी जैकेट खोली और उसमें से एक सुन्दर कुत्ते के पिल्ले को बाहर निकाला! पापा को वो पिल्ला शहर सी सड़कों पर अकेला घूमता हुआ मिला था.

माई ने पिल्ले की नाक पर पुच्ची दी. क्यूंकि वो बहुत छोटा था इसलिए माई ने उसका नाम “पोको” रखा.

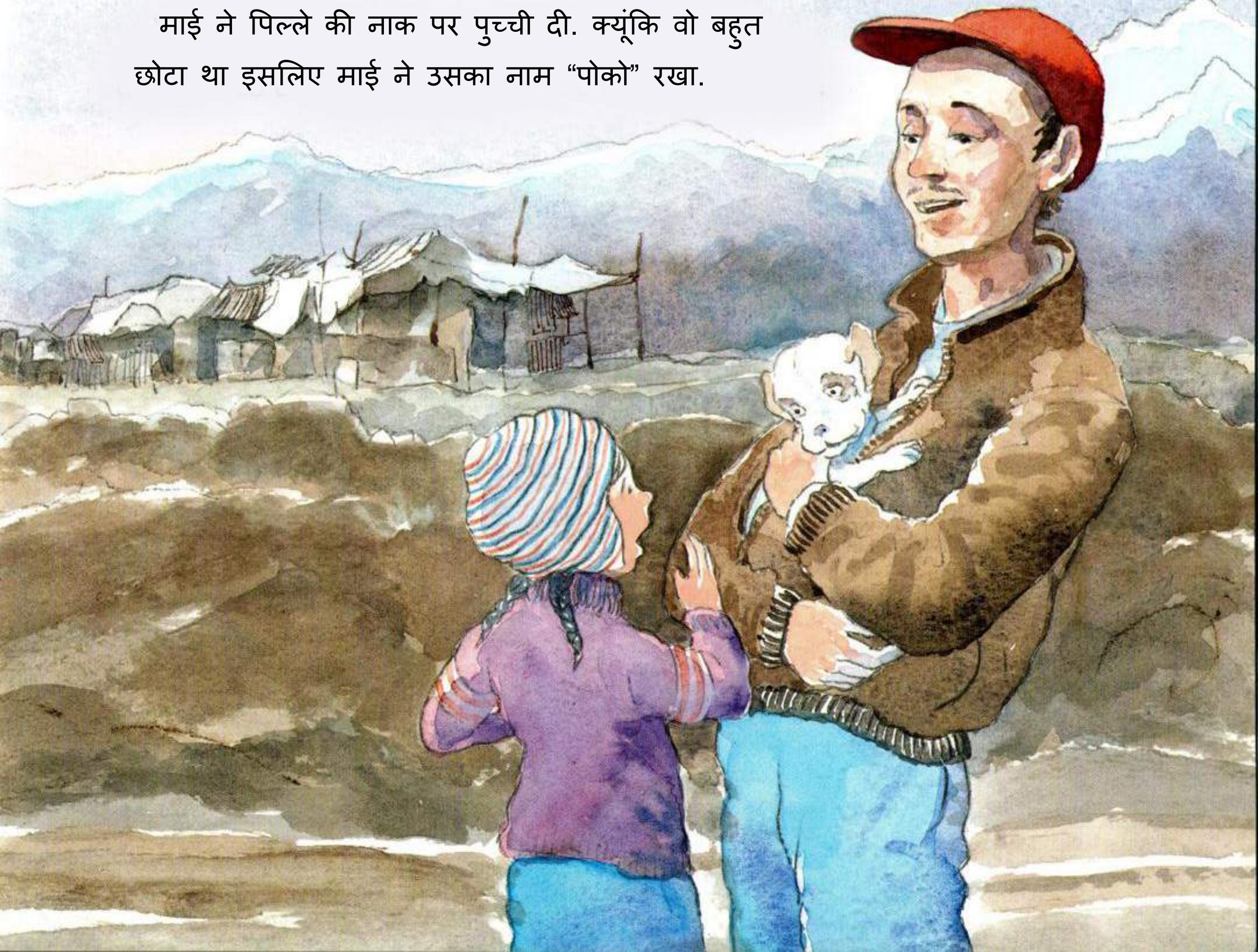

माई ने अपने पिल्ले को सब लोगों को दिखाया.
जल्द ही पोको उनकी ज़िन्दगी का हिस्सा बन गया.

पोको को भी नया
परिवार पसंद आया.

पहले पोको ने माई के चेहरे को चाटा. फिर माँ के और उसके बाद पापा के चेहरे को चाटा.

फिर माई ने पोको
को सांचो घोड़े को
दिखाया.

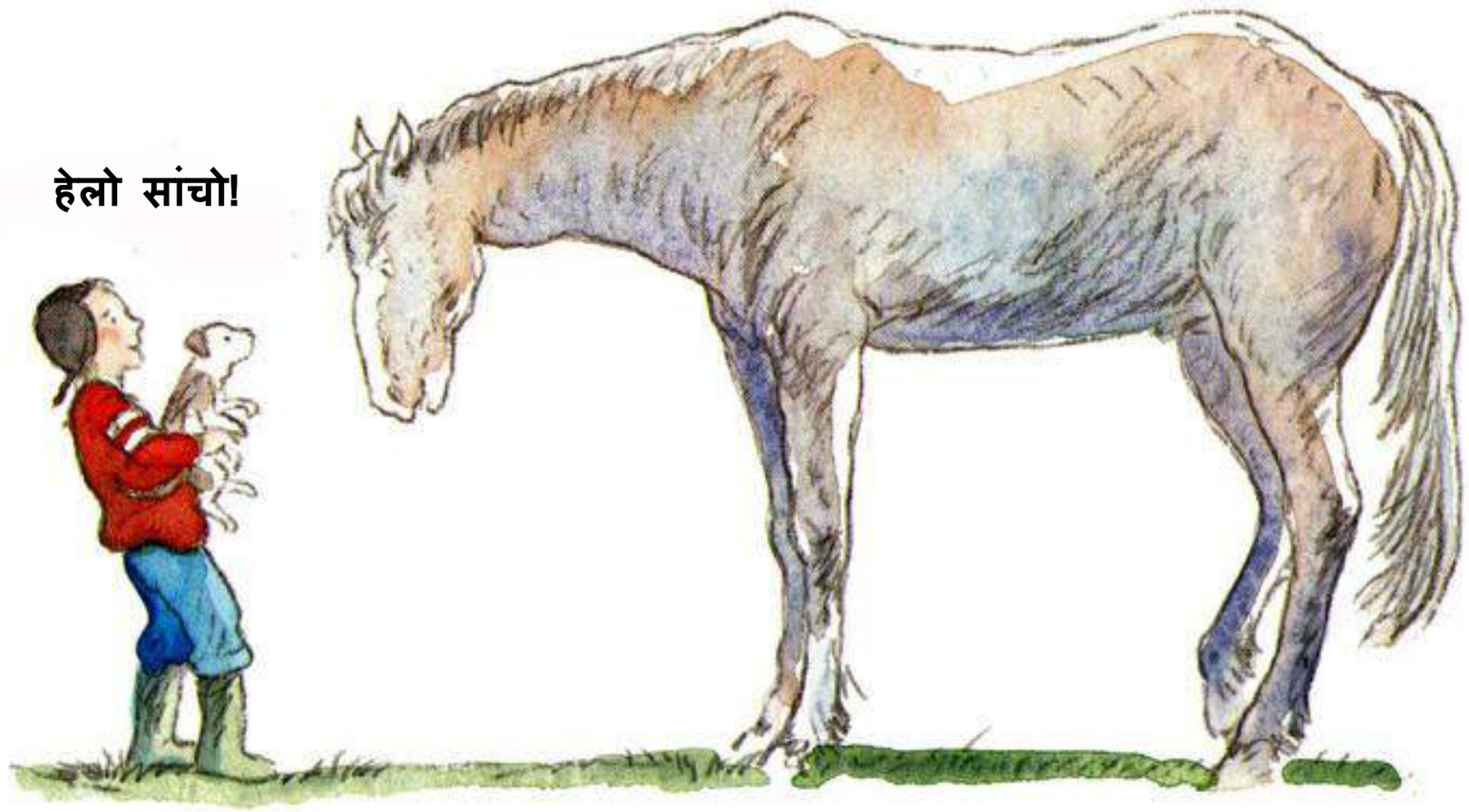

पोको बहुत अच्छा है.
वो बाहर चुपचाप स्कूल ख़त्म होने का इंतज़ार करता है.

पोको हर समय माई के
पीछे-पीछे दौड़ता है –
वो स्कूल भी जाता.

फिर जाड़ों में एक कड़कदार सर्दी वाले दिन कोको कहीं गायब हो गया. माई ने उसे पूरे गाँव में खोजा, फिर वो सांचो पर सवार होकर कचरे के पूरे ढेर में कोको को ढूँढने निकली.

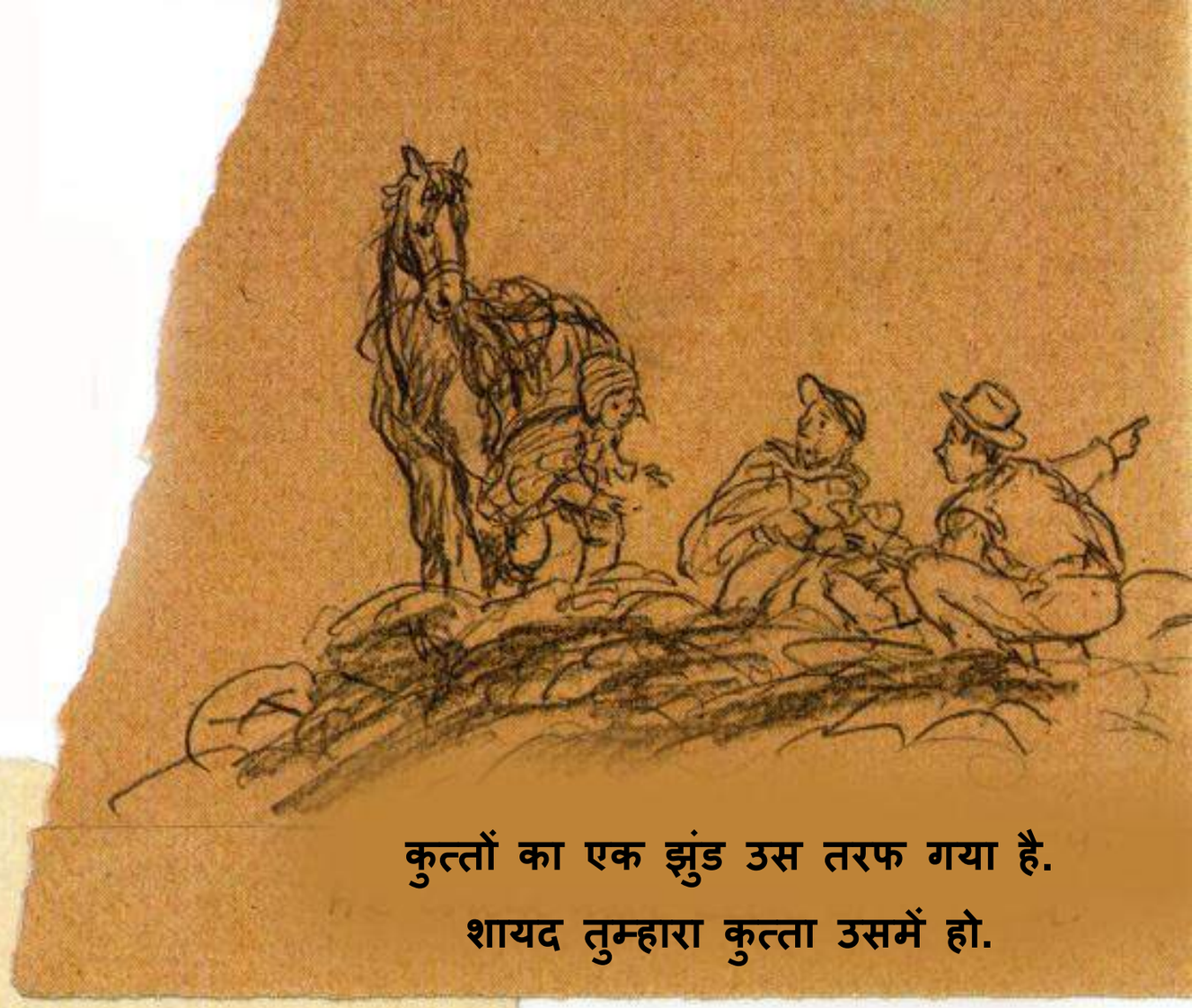

कुत्तों का एक झुंड उस तरफ गया है.
शायद तुम्हारा कुत्ता उसमें हो.

क्या आपने मेरे छोटे कुत्ते को देखा है?

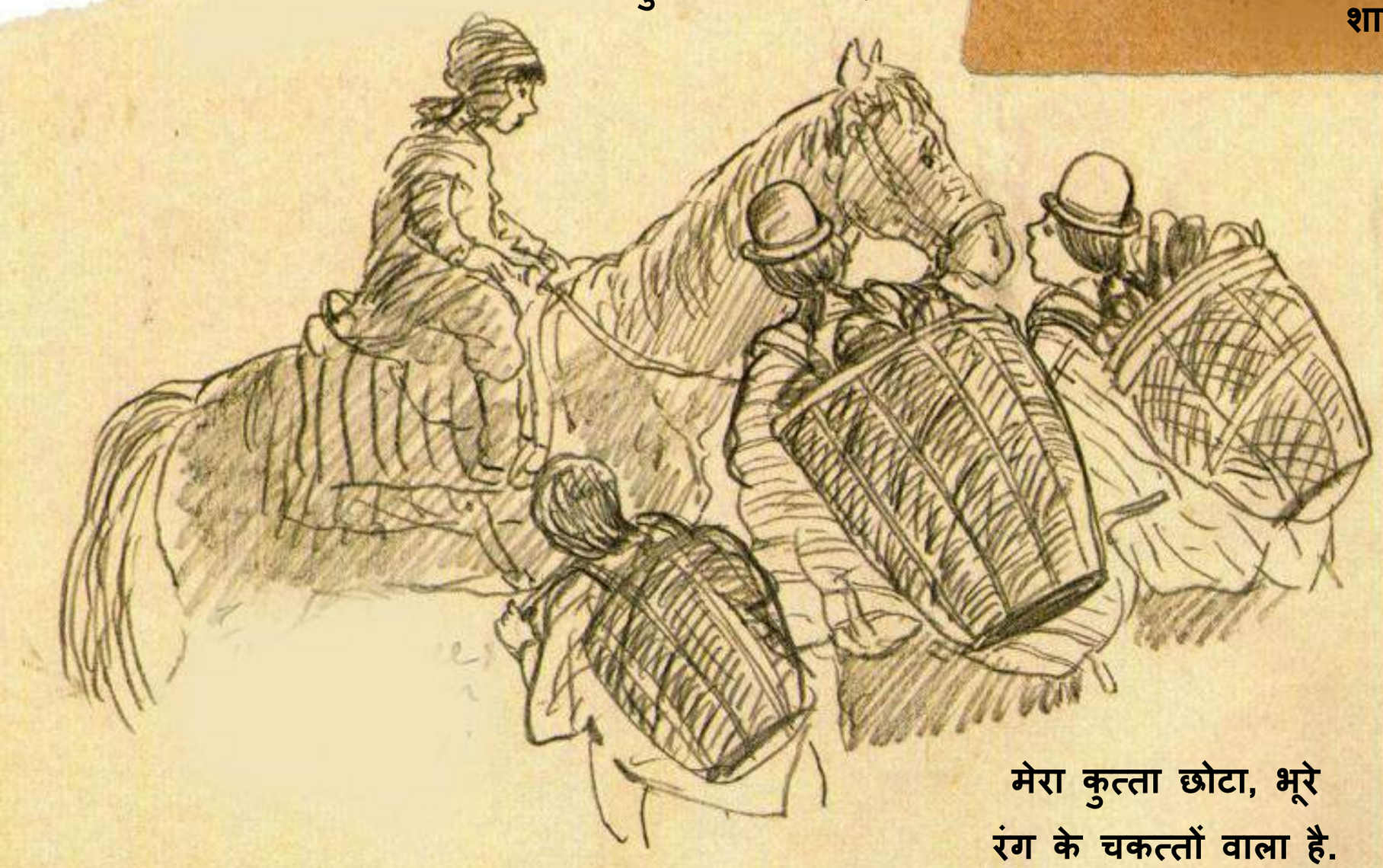

मेरा कुत्ता छोटा, भूरे रंग के चकत्तों वाला है.

चलो सांचो हम उसे खोज निकालेंगे.

पोको! पोको!

पोको को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते माई घर से बहुत दूर निकल गई.

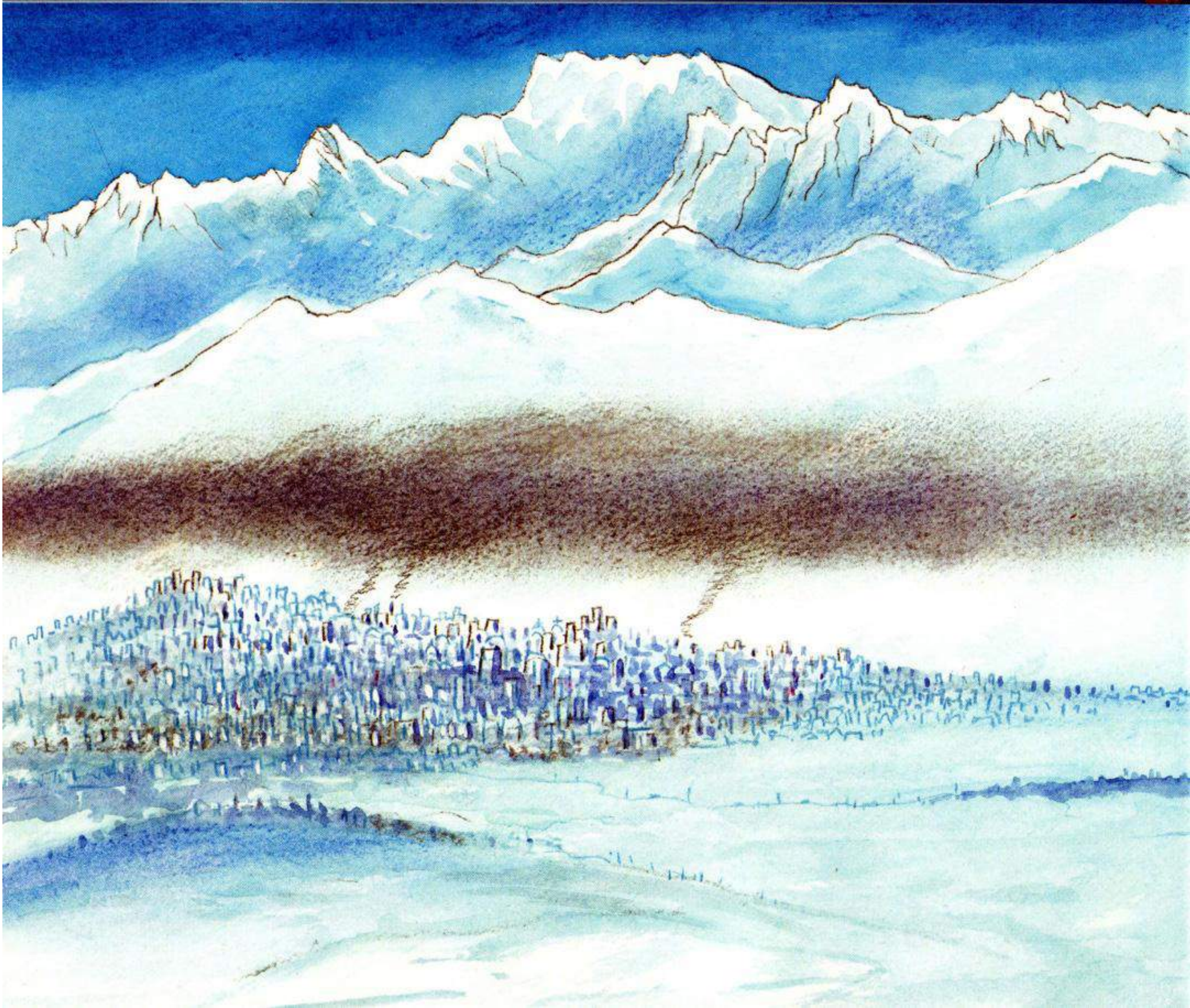

अंत में उसने खुद को एक पहाड़ी के ऊपर पाया. वो उतनी ऊंचाई पर पहले कभी नहीं गई थी. उतनी ऊंचाई से वो नीचे उन बादलों को देख सकती थी, जो उसकी घाटी में हमेशा छाए रहते थे.

उन बादलों के ऊपर हवा इतनी साफ़ थी कि उसे देखकर माई को पहले तो यकीन ही नहीं हुआ. उसके चारों ओर सफ़ेद कच्ची बर्फ यानि स्नो बिखरी हुई थी. वो अपने घोड़े सांचो से नीचे कूदी और उसने स्नो को अपनी दोनों मुट्ठियों में भरा. फिर वो सफ़ेद स्नो के कालीन पर काफी देर तक लोटती रही.

सांचो पहले तो माई को देखता रहा. फिर घोड़ा भी स्नो में लोटा और उसने अपनी टांगें हवा में उछालीं. माई काफी देर तक स्नो में अपने हाथ-पैर फैलाकर लेटी रही. उसने इतना नीला आसमान पहले कभी नहीं देखा था.

फिर रात ढलने तक और तारों के निकलने तक माई कोको को खोजती रही. बाद में उसने अपनी खोज बंद की. अब तक माई थककर चूर हो गई थी पर उसे पता था कि सांचो उसे सुरक्षित घर वापिस ले जायेगा.

वो धीमी रफ़्तार से आगे बढ़े. फिर अचानक सांचो रुका और उसने ज़मीन में कुछ सूंघा. अब स्नो की बजाए उनके चारों ओर फूलों का एक सुन्दर कालीन बिछा था. माई ने उतरकर सावधानी से कुछ फूल के पौधों को उनकी जड़ों समेत उखाड़ा. उसे लगा कि वे फूल और आसमान के तारे उसके मन में कोको की याद सदा को बरक़रार रखेंगे.

अगले दिन माई ने उन फूलों के पौधों को बोया.

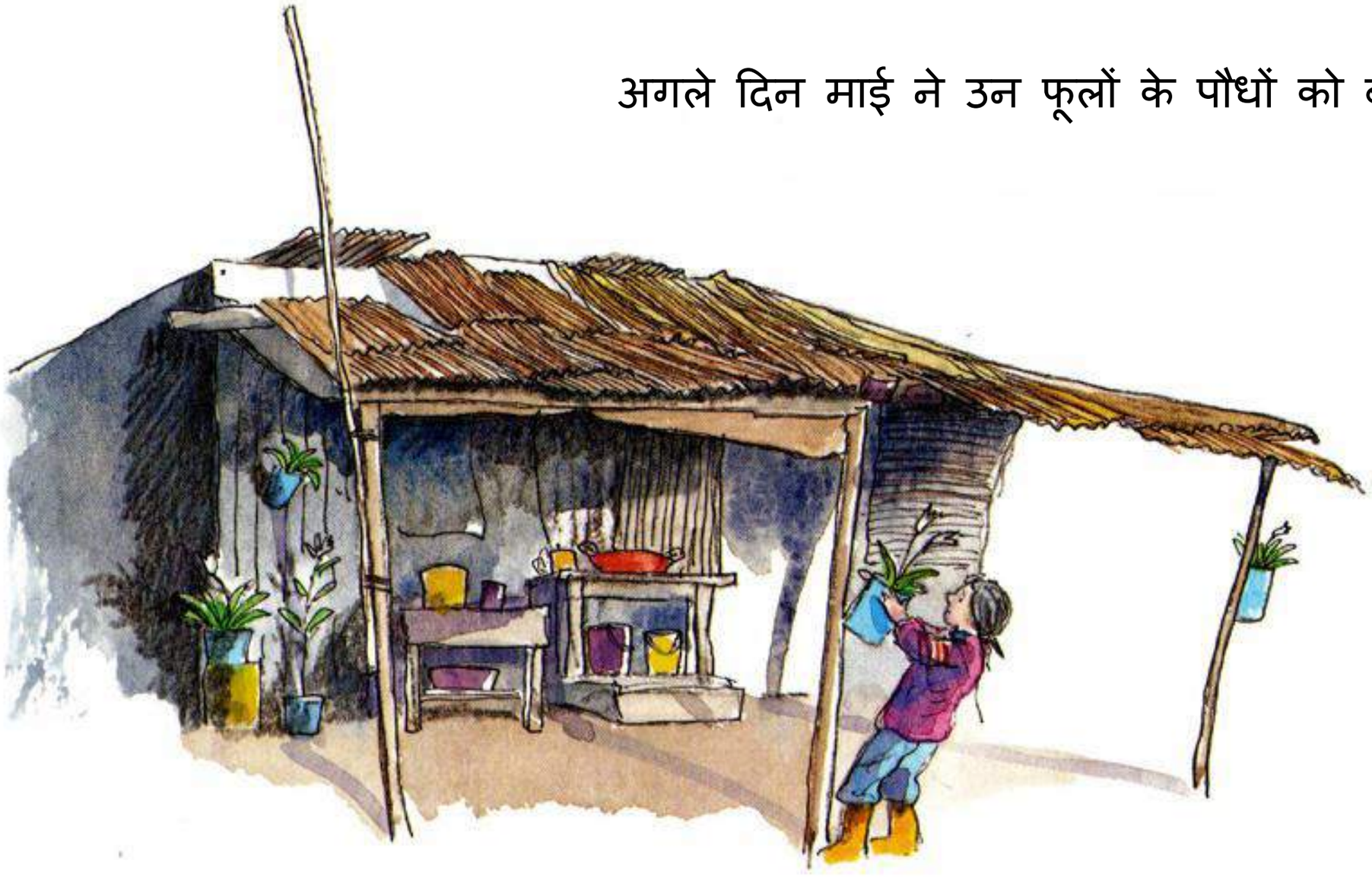

कुछ पौधों को उसने टीन के डिब्बों में बोया.

उसने उनकी अच्छी
देखभाल की और उन्हें
पानी दिया.

धीरे-धीरे फूल के पौधे बड़े हुए और
गर्मियों में उनमें ढेरों फूल लगे.

फिर पतझड़ के समय तेज़ हवा के झोंकों ने
फूलों के बीजों को पूरे गाँव में फैलाया.

इस तरह फूल बहुत तेज़ी से चारों ओर फैले. फिर वसंत में गाँव के पास कचरे की पहाड़ी पर फूल-ही-फूल उगने लगे. मलबे का पहाड़ फूलों से पूरी तरह ढँक गया - बिल्कुल वैसे, जैसे वो ऊंची पहाड़ी स्नो से ढंकी थी.

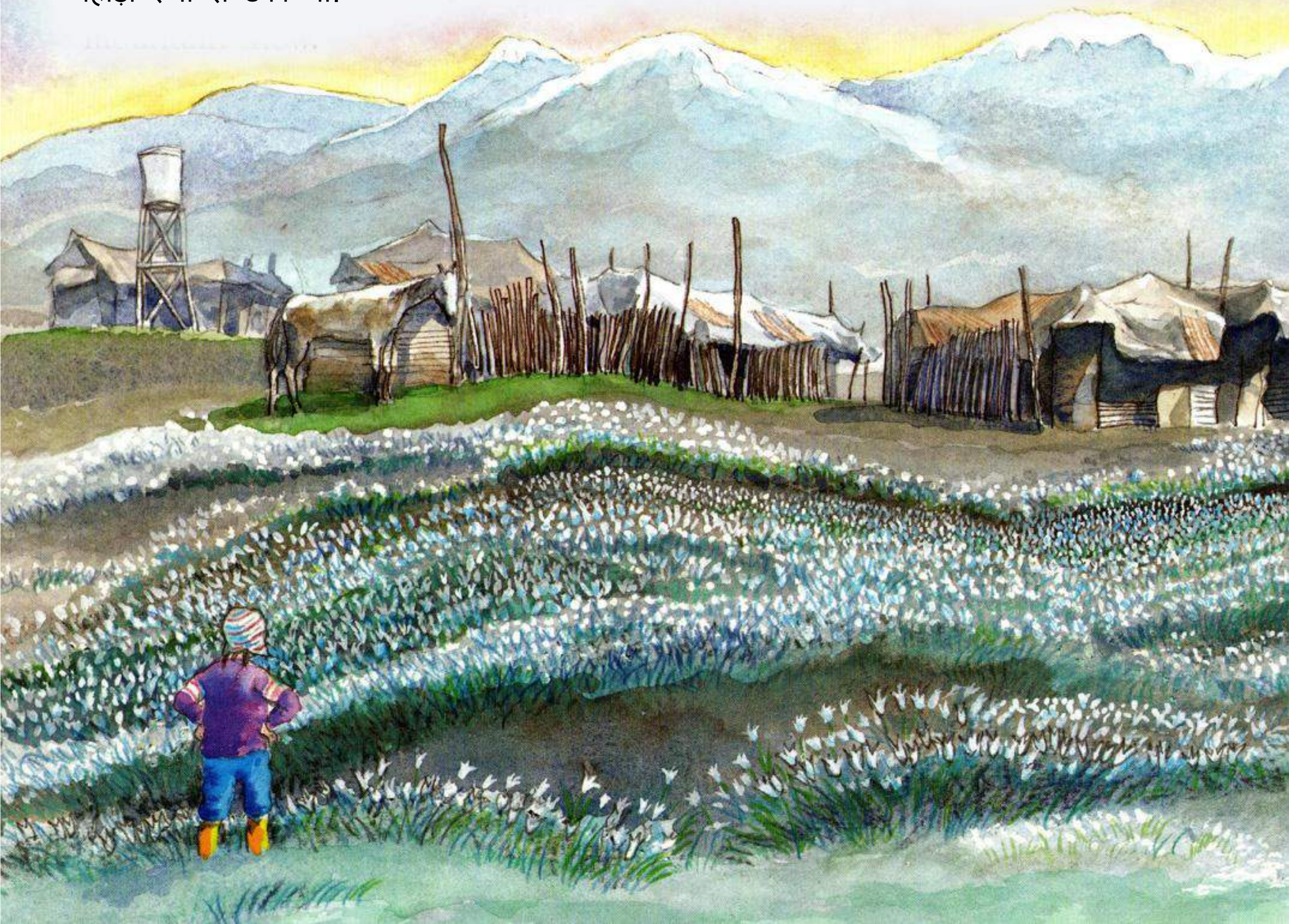

माई को फूलों की देखभाल करने में बहुत मज़ा आता पर फिर भी उसे अपने पोको की बहुत याद सताती थी. वो रोजाना कोको को उसका नाम लेकर पुकारती थी.

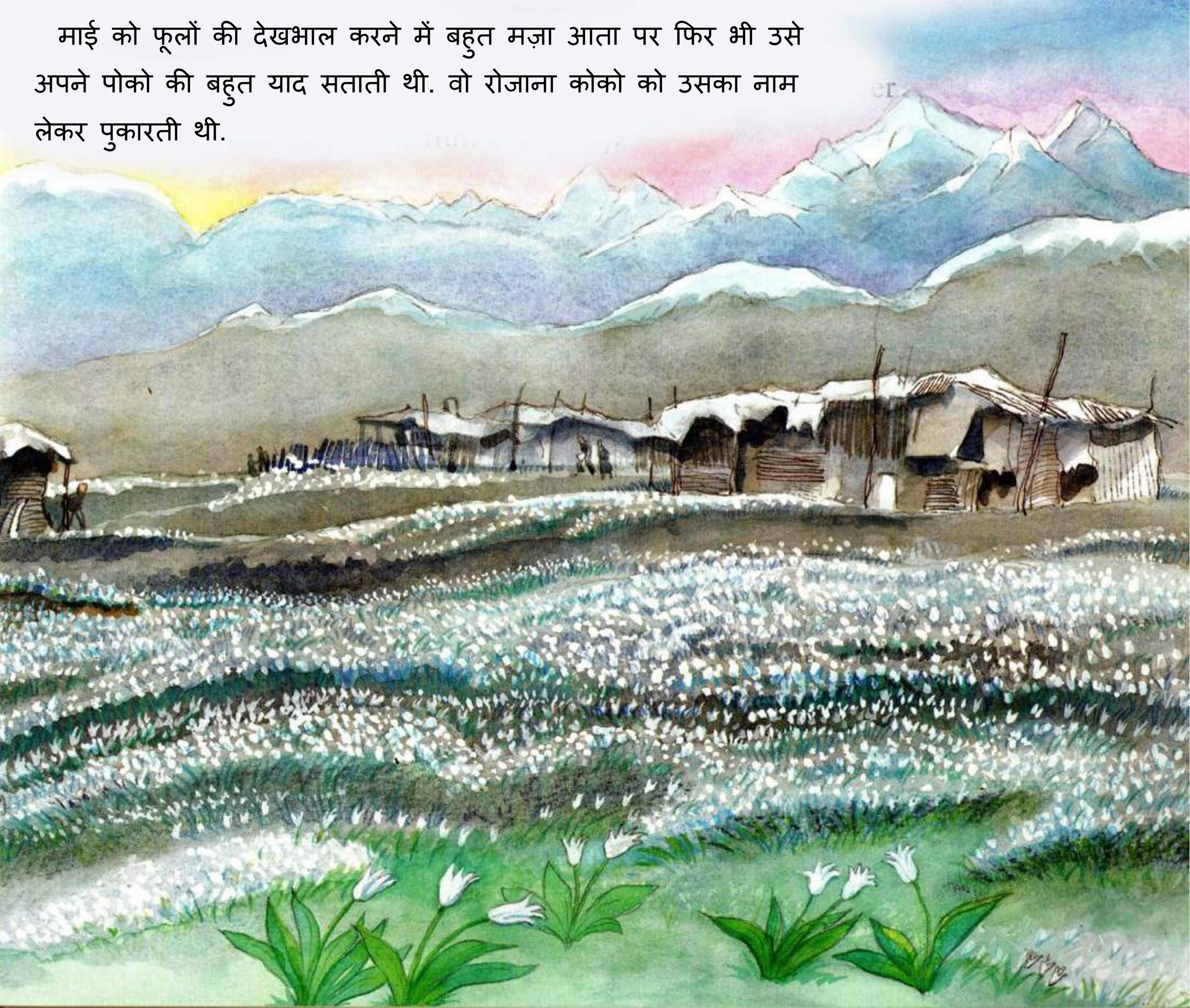

एक दिन जब पिता शहर में कबाड़ बेंचने जा रहे थे तब माई ने भी उनके साथ आने का आग्रह किया. वो शहर में फूल बेंचना चाहती थी. उसने पुराने टीन और प्लास्टिक के डिब्बों में उगे फूल, पापा को दिखाए. पहले तो पापा हँसे फिर बाद में वो माई को शहर ले जाने के लिए तैयार हो गए.

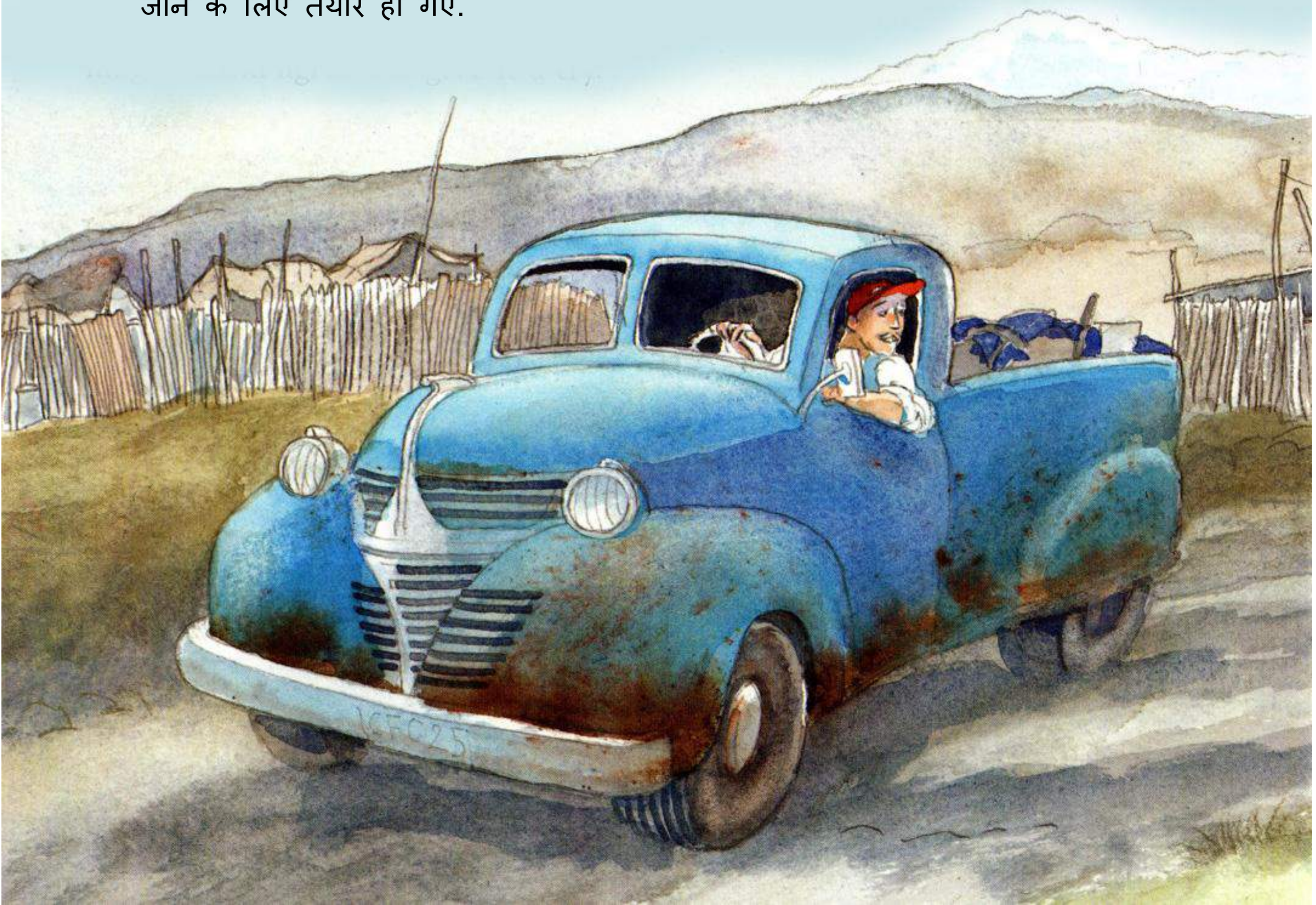

माई ने फूलों के गमलों को एक चर्च की सीढ़ियों पर रखा. वहीं पास में पापा ने अपना कबाड़ का सामान फैलाया.

शहर का मुख्य चौक व्यापारियों से
खचाखच भरा था.

चाहें बारिश हो
या धूप.

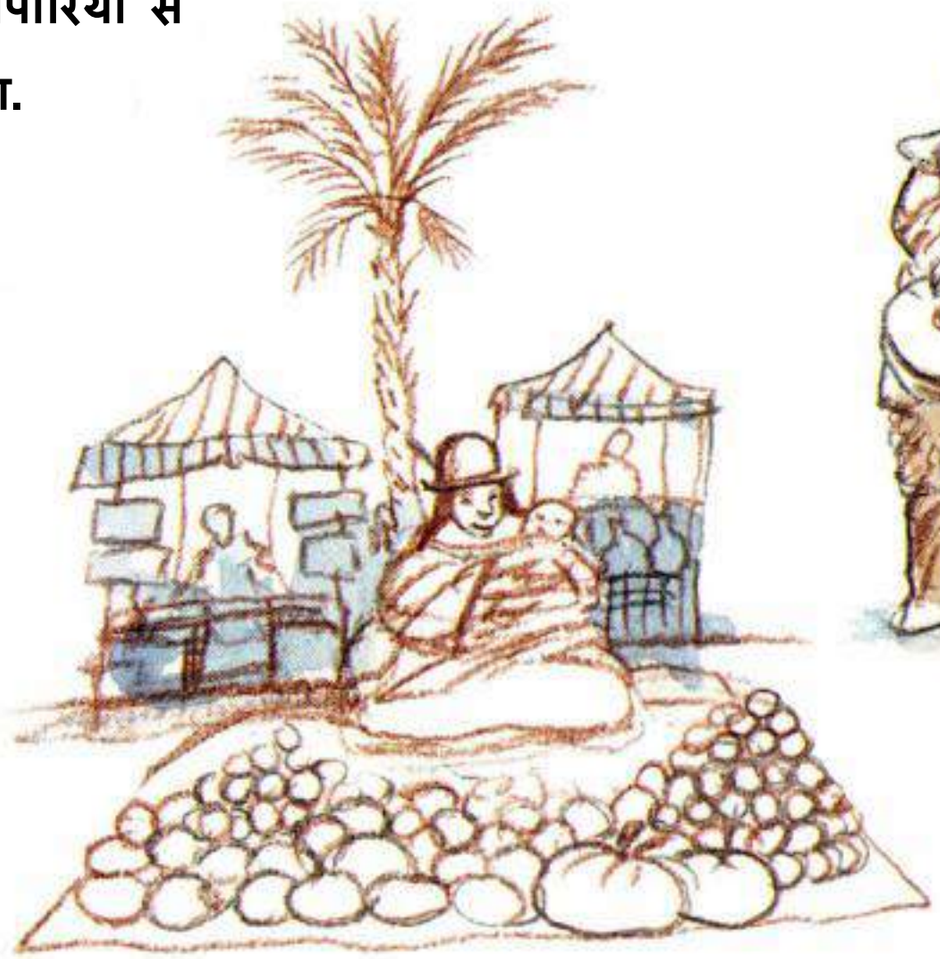

वहां हमेशा गाने-बजाने वाले
संगीतज्ञ ज़रूर होते थे.

आज ज्यादा
बिक्री नहीं हुई?

कितना सुन्दर बच्चा है!

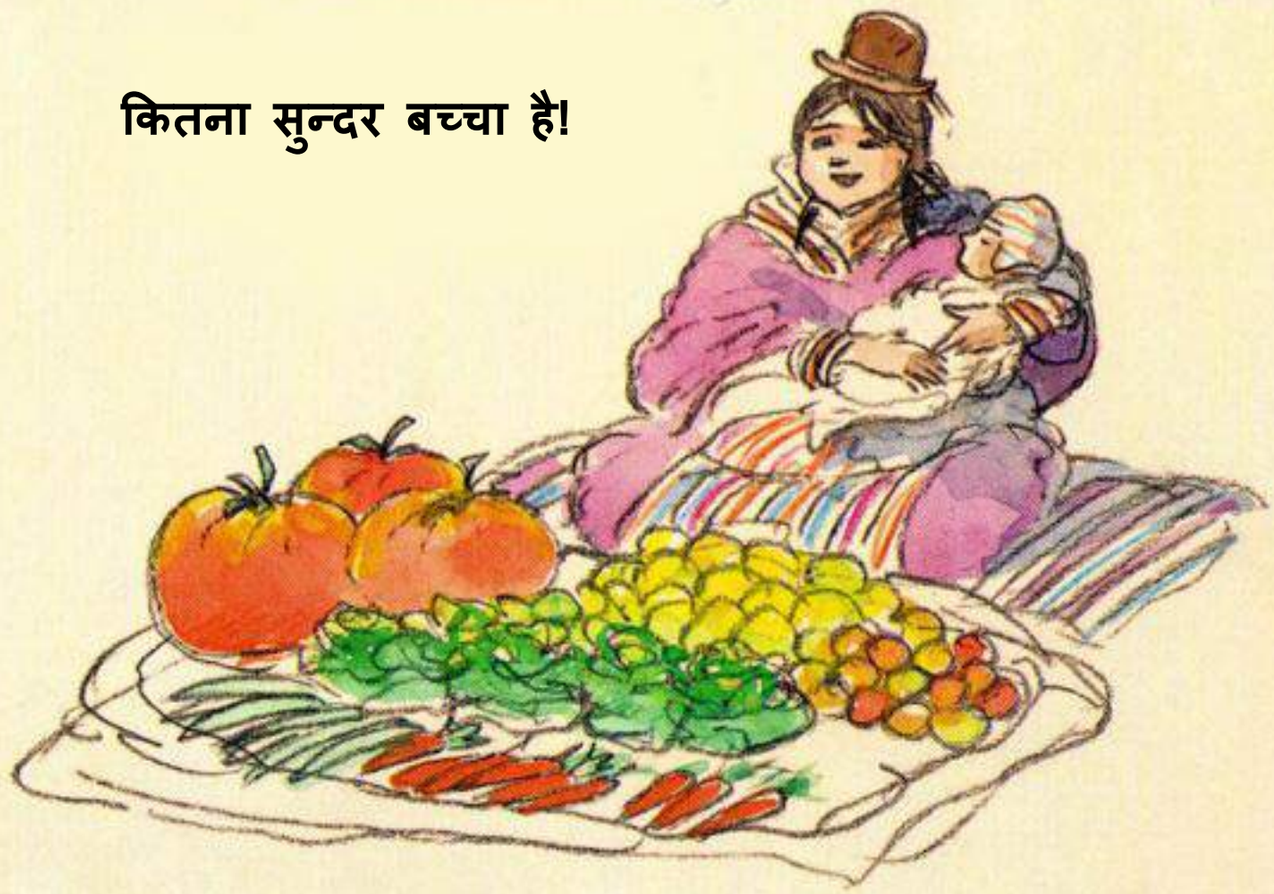

जल्द ही माई की दुकान पर फूल खरीदने वालों की भीड़ लग गई. कुछ देर बाद पापा ने कबाड़ का काम बंद करके फूल बेंचने में माई की मदद की. लोग अक्सर एक ही सवाल पूंछते, “यह सुन्दर फूल कहाँ से आए हैं?” तब माई जवाब देती, “यह फूल आसमान के तारों से आए हैं.”

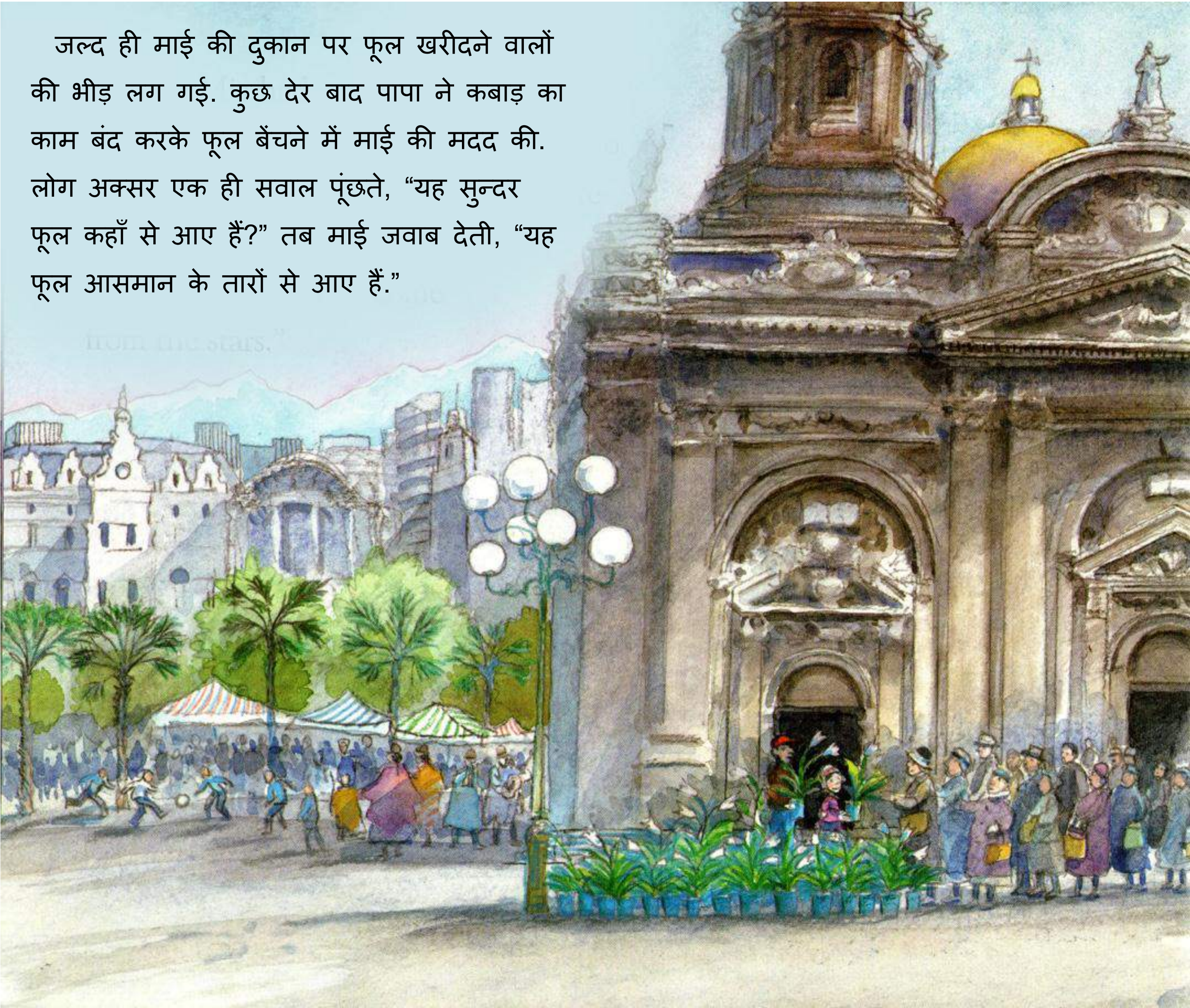

उस दिन के बाद से माई और पापा फूल बेंचने का काम करने लगे. उसमें ज्यादा कमाई होती थी. शायद उससे पक्के मकान का उनका सपना कभी पूरा हो. जब माई को कभी कोई कुत्तों का झुंड दिखता तो उसे तब अपने पोको की याद ज़रूर आती....

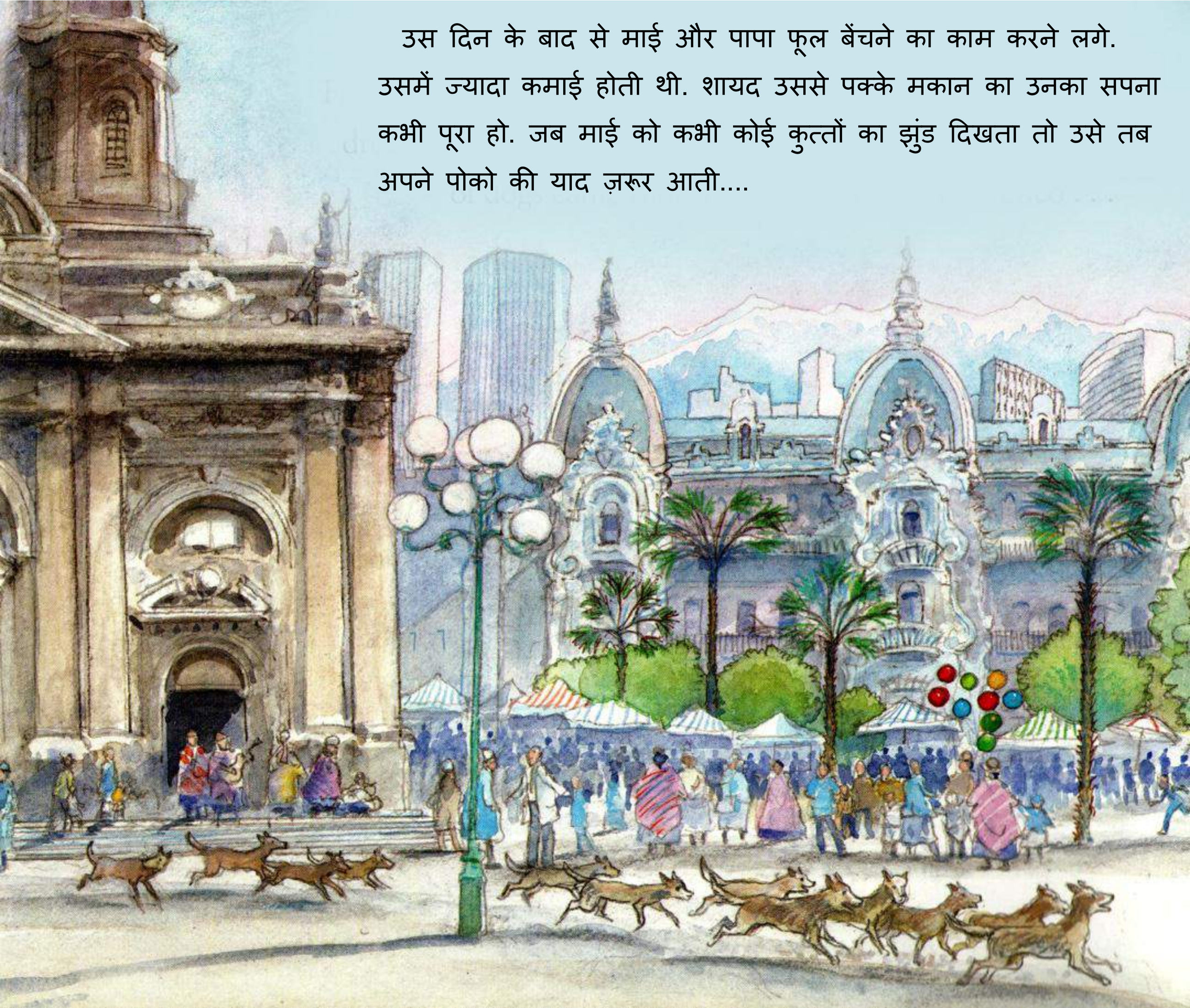

फिर एक दिन उनमें से एक कुत्ता रुका और उसने फूल सूंघे.
उसने माई का मुंह चाटा और फिर वहीँ उसके पास आकर लेट गया.

मनुएल और उसके परिवार के लिए.
काश तुम एक दिन ईंटों के पक्के घर
में रह सको.

चलो, जल्दी चलो पोको!

माई के पापा का
पक्का मकान में
रहने का सपना
ज़रूर पूरा हो.

यह सुन्दर फूल
आसमान के तारों
से आते हैं.